# दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
# गोरखपुर-273001
( नैक प्रत्यायित )
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 9792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in


दिनांकः 08.09.2020

**प्रकाशनार्थ**

**शिक्षा नीति गतिशील होनी चाहिए- प्रो. जे.एस. राजपूत**

दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय द्वारा आयोजित '**राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का उच्च शिक्षा में क्रियान्वयन**' विषय पर आयोजित द्वि–दिवसीय वेबिनार के तृतीय सत्र में विशिष्ट वक्ता के रूप में सम्बोधित करते हुए पद्मश्री प्रो. जे.एस.राजपूत पूर्व निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली ने कहा कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में शोध की चुनौतियों, शिक्षा के मूल पॉच तत्व– सत्य, अंहिसा, शांति, धर्म एवं प्रेम तथा वर्तमान कार्यसंस्कृति को बदलने की आवश्यकता पर अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि छात्रों में अध्ययन मनन चिन्तन और उसके उपयोग करने की प्रवृत्ति के साथ सर्वे भवन्तु सुखिनः के भाव को विकसित करना होगा। छात्रों को आधुनिक ज्ञान से परिचित होने के साथ–साथ अपनी जड़, संस्कृति, से जुड़ाव उत्पन्न करना होगा, साथ ही अपनी भारतीय ज्ञान परंपरा का सम्मान करते हुए वैश्विक स्तर पर समाज से जुड़ना होगा। उन्हें अपने सोच के दायरे को विकसित करते हुए अनवरत सीखना होगा। इस नीति की मुख्य तीन बातों–तंत्र, तथ्य और तत्व पर समन्वय स्थापित करके शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने पर जोर दिया।

चतुर्थ सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. आलोक कुमार राय, कुलपति लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ तथा प्रो. मजहर आसिफ, सदस्य, मसौदा समीति–राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, जे.एन.यू, दिल्ली उपस्थित रहे। प्रो. आलोक कुमार राय ने बताया कि यह नई शिक्षा नीति मनुज से मानवता तथा अतीत से आधुनिकता की ओर ले जाने वाली है। यह छात्र केन्द्रित शिक्षा नीति है जो विद्यार्थी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास को केन्द्र मे रख कर बनायी गयी है। आपने बताया कि शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार को प्रोत्साहन मिलना चाहिए साथ ही शिक्षा में लचरता अत्यन्त आवश्यक है परिस्थिति के अनुरूप आवश्यकतानुसार उसमें परिवर्तन होना चाहिए। आपने शैक्षिक प्रबन्धन और आर्थिक प्रबन्धन की आवश्यकता पर बल दिया।

चतुर्थ सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. मजहर आसिफ ने बताया कि यह नई शिक्षा नीति हमारी संस्कृति पर आधारित है जिसकी बुनियाद–ज्ञान, धर्म, शिक्षक तथा छात्र है। इसका मुख्य उद्देश्य छात्र को हुनरमंद बनाना है जो अपनी कला एवं संस्कृति तथा अपने ज्ञान परंपरा से जोड़कर एक बेहतर इंसान तैयार करना है।

वेबिनार के समापन/ पंचम सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. रमा शंकर दूबे, कुलपति, गुजरात केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर, गुजरात ने अपने उद्बोधन के माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 को पूरे देश के जनता के शिक्षा नीति कहा, जिसमें राष्ट्रीयता की स्पष्ट झलक समाहित है। उन्होंने भौतिक ज्ञान को आध्यात्मिक ज्ञान से समन्वित कर विद्यार्थी के सर्वागीण विकास पर जोर दिया साथ ही विद्यार्थियों के रटने की प्रवृत्ति को दूर कर उसे स्वतः समझकर, सोचकर, सक्रिय रहकर अनुभव के आधार पर सीखनें हेतु अनुकूल वातावरण प्रदान करने पर बल दिया। साथ ही समाज की आवश्वयकता अनुरूप गुणवत्तापूर्ण शोध हेतु फन्ड को आवंटित करने का बल दिया। समापन सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. मिलिन्द मराठे, के.जे.सोमैया. इंजीनियरिग कालेज, मुंबई, महाराष्ट्र, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने अपने उद्बोधन में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 को सर्व समावेशक, समतामूलक, विद्यार्थी केन्द्रित तथा भारतीय आत्मा से युक्त भविष्यउन्मुखी नीति के रूप में सदंर्भित करते हुए, विद्यार्थियों को संवैधानिक मूल्यों के प्रति सजग बनाने की बात कही। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 क्रियान्वयन हेतु हम सभी को वैचारिक रूप से स्पष्ट होना पड़ेगा तथा उसके हर पहलू को स्वीकृत करते हुए नीति को लागू करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से क्रियान्वयन करना होगा।

कार्यक्रम में विशिष्ट वक्ता, मुख्य अतिथि तथा मुख्य वक्ता का स्वागत क्रमशः वेबिनार के संयोजक डॉ. राज शरण शाही एवं डॉ शुभ्रा श्रीवास्तव तथा डॉ. अमरनाथ तिवारी के द्वारा किया गया आभार ज्ञापन डॉ. अर्चना सिंह के द्वारा किया गया सम्पूर्ण वेबिनार का रिर्पोट डॉ शुभ्रा श्रीवास्तव के द्वारा प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संचालन वेबिनार के आयोजन सचिव डॉ.सुभाष चन्द्र के द्वारा किया गया कार्यक्रम की सम्पूर्ण अध्यक्षता तथा आभार ज्ञापन प्राचार्य डॉ शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने किया।

डॉ.(शैलेश कुमार सिंह)
प्रभारी,सूचना एवं जनसम्पर्क